वार्षिकी
2016
भारतीय साहित्य सर्वेक्षण

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

भारत सरकार

वार्षिकी : 2016

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से 07

संपादकीय 09

लेख

1.	असमिया साहित्य	डॉ. भूपेंद्र रायचौधरी	11
2.	उर्दू साहित्य	डॉ. जुबैदा हाशिम मुल्लाँ	36
3.	कन्नड़ साहित्य	डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'	52
4.	कश्मीरी साहित्य	डॉ. महाराजकृष्ण भरत मुसा	69
5.	कोंकणी साहित्य	डॉ. चंद्रलेखा डिसूजा	81
6.	डोगरी साहित्य	ओम गोस्वामी	91
7.	तेलुगु साहित्य	डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा	109
8.	नेपाली साहित्य	ज्ञानबहादुर छेत्री	121
9.	पंजाबी साहित्य	डॉ. हर्ष कुमार हर्ष	130
10.	बंगला साहित्य	डॉ. अरिजीत कुंडू हिंदी अनुवाद: डॉ. शर्मिष्ठा सेन	159
11.	बोडो साहित्य	डॉ. अनुशब्द, मोरोमी रॉय बरुआ	168
12.	मणिपुरी साहित्य	प्रो. ह. सुवदनी देवी, डॉ. चांदम इङो सिंह	178
13.	मराठी साहित्य	डॉ. दामोदर खड़से	196
14.	मैथिली साहित्य	वैद्यनाथ झा	208
15.	संस्कृत साहित्य	डॉ. अजय कुमार मिश्र	221
16.	सिंधी साहित्य	डॉ. सुरेश बबलाणी	238

11

बोडो साहित्य

डॉ. अनुशब्द,
मोरोमी रॉय बरुआ

पूर्वोत्तर भारत अपने आप में समग्र भारत की तस्वीर है। यहाँ कई सारी भाषाओं, जातियों एवं संस्कृतियों की महत्वपूर्ण उपस्थिति है। पूरा प्रदेश कला, साहित्य एवं संस्कृति की दृष्टि से अद्‌भुत, अतुलनीय और अकल्पनीय है। खासकर लोकभाषा एवं लोकसाहित्य से समृद्‌ध समग्र पूर्वांचल भारत जैसे सामासिक मिजाज वाले देश की मुकम्मल पहचान है। पूरा पूर्वोत्तर भारत जनजातिबहुल प्रदेश है। यहाँ की विभिन्न जनजातियों की अपनी अलग-अलग भाषा, कला एवं संस्कृति है। इन्हीं जनजातियों में से एक प्रसिद्‌ध, प्रतिष्ठित तथा समृद्‌ध जनजाति है 'बोडो'। भारतीय पुराणों एवं मिथकों में भी इनकी सशक्त उपस्थिति है। कहा जाता है कि 'महाभारत' में जिन किरातों के बारे में जिक्र मिलता है वे इसी बोडो जनजाति के लोग थे। बोडो मंगोल नस्ल की तथा ब्रह्मपुत्र-घाटी में निवास करने वाली जनजाति है। अन्वेषकों ने इस जनजाति को असम घाटी और उत्तरी कछार के सभी अनार्य तत्वों के रूप में चिन्हित किया है। माना जाता है कि अहोमों के आने से पहले इसी जनजाति ने पूर्वी तिब्बत से आकर यहाँ के एक बड़े भू-भाग पर राज किया था। बोडो लोग विशेषकर शैवपंथ में दीक्षित होते हुए भी बाथौ पंथ के साथ संबंधित हैं।

बोडो मुख्यत: असम की जनजाति है लेकिन पश्चिम बंगाल, मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, भूटान, नेपाल आदि में भी कमोबेश इनकी उपस्थिति है। असम का कोकराझाड़ और उदालगुड़ी बोडोबहुल क्षेत्र है। इनकी भाषा 'बोडो' है जो कि भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल है। यह

मूलतः तिब्बत-बर्मी भाषा परिवार की भाषा है। इस भाषा ने देवनागरी लिपि को अपना लिया है।

बोडो साहित्य भाषा, भाव एवं विषय-वस्तु की दृष्टि से काफी समृद्ध है। राउना राउनी, चंद्रमाली खोथिया बुंदा, आसागि बैगाछी आदि कहानियाँ, कछीराम जौहोलाउ, जाऊलियाचौन देउवान आदि कथात्मक गीत तथा हावामेथाय (बिहू गीत) जैसे लोकगीतों एवं लोकसाहित्य की अन्य प्रचलित विधाओं से बोडो भाषा और साहित्य भरा पड़ा है। बोडो भाषा तथा साहित्य को और समृद्ध बनाने एवं उसे गतिशीलता प्रदान करने हेतु वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली ने बोडो साहित्य सभा के साथ मिलकर बोडो भाषा के 40 हजार से अधिक तकनीकी शब्दों को प्रकाशित किया है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा साहित्य अकादमी जैसी देश की शीर्षस्थ संस्थाएँ भी बोडो भाषा और साहित्य के प्रचार, प्रसार एवं विकास के लिए कटिबद्ध हैं। इस संदर्भ में निदेशालय द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित 'वार्षिकी' का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो इस भाषा की साहित्यिक गतिविधियों से सुधीजनों को लगातार अवगत कराती रहती है। बोडो साहित्य सभा के नेतृत्व और प्रतिनिधित्व में बोडो भाषा एवं साहित्य निरंतर प्रसिद्धि तथा समृद्धि की ओर अग्रसर है।

आज बोडो साहित्य में कहानी, नाटक, काव्य, निबंध, उपन्यास आदि हर साहित्यिक विधा उपलब्ध है। बोडो भाषा के रचनाकार साहित्य-सृजन के क्षेत्र में अनवरत प्रयासरत हैं। इसकी गुणात्मक और परिमाणात्मक श्रीवृद्धि में अनुवाद की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इस दृष्टि से वर्ष 2016 की बोडो भाषा की साहित्यिक उपलब्धियों एवं गतिविधियों का महत्व उल्लेखनीय है।

कहानी-संग्रहों के प्रकाशन की दृष्टि से यह वर्ष काफी समृद्ध रहा। इस वर्ष कुल लगभग 7 कहानी-संग्रहों का प्रकाशन हुआ जिनमें से प्रमुख हैं- पहला, रबिन नर्जरी द्वारा लिखित तथा कुशल शर्मा द्वारा संपादित 'भाइरास' (वायरस) कहानी-संग्रह। यह पुस्तक किताब समलय, पानबाजार, गुवाहाटी द्वारा जनवरी, 2016 में प्रकाशित की गई है। इस कहानी-संग्रह में कुल पंद्रह